DR.MALA KUMARI
ASSISTANT PROFESSOR (GUEST TEACHER)
DEPARTMENT OF PSYCHOLOGY
A.N.D COLLEGE SHAHPUR PATORY,SAMASTIPUR
B.A –PART 2 PSYCHOLOGY (HONS)
PAPER-3 ,UNIT-6,
NATURE OF DISSOCIATIVE DISORDERS
LECTURE-62

मनोविच्छेदी विकृति का स्वरूप

NATURE OF DISSOCIATIVE DISORDERS

मनोविच्छेदी विकृति एक महत्वपूर्ण एवं सामान्य मानसिक रोग है जिसमे रोगी के मानसिक प्रक्रियाएँ विशेषकर स्मृति या चेतना जो समन्वित रहता है , विच्छेदित हो जाता है |जिससे व्यक्ति अपने आप को तथा वातावरण को भिन्न ढंग से प्रत्यक्षण करने लगता है |कहने का तात्पर्य यह है की मनोविच्छेदी विकृति का सबसे प्रमुख लक्षण विच्छेदन है |विच्छेदन की अनुभूति में अन्य बातों के अलावा निम्नांकित पाँच तरह की अनुभूतियाँ अधिक होती है –

1. **स्मृतिलोप (AMENSIA)**-स्मृतिलोप में रोगी अपने पूर्व अनुभूतियों का आंशिक या पूर्णरूपेण प्रत्याह्वान करने में असमर्थ रहता है |
2. **व्यक्तित्वलोप (DEPERSONALIZATION)**-इसमें रोगी अपने आप से असम्बद्ध महसूस करता है |रोगी को ऐसा महसूस होता है की वह कोई में धारा बह रहा है या वह अपने ही गतिविधियों को बाहर से खड़ा होकर देख रहा है |
3. **वास्तविकता लोप (DEREALIZATION)**-इसमें रोगी को पूरा वातावरण ही अवास्तविक एवं अविश्वसनीय लगता है |
4. **पहचान संभ्रान्ति (IDENTITY CONFUSION)**-इसमें रोगी को पूरा वातावरण ही अवास्तविक एवं अविश्वसनीय लगता है |
5. **पहचान बदलाव (IDENTITY ALTERATION)**-इसमें रोगी कभी-कभी कुछ आश्चर्य उत्पन्न करने वाले कौशलों से अपने को लैश पाता है |रोगी को आश्चर्य इसलिए होता है की उसे पता भी नहीं रहता है की उसमे ऐसा कौशल है |जैसे संभव ही कभी-कभी रोगी विदेशी भाषा के कुछ ऐसे शब्दों का उपयोग करके अपने संभाषण को आकर्षक बना देता है की उसे आश्चर्य होने लगता है |

स्पष्ट हुआ की मनोविच्छेदी विकृति में रोगी को विच्छेदन का जो अनुभव होता है , उसमे कई तरह की अनुभूतियाँ सम्मिलित होती है |